KALAM ACADEMY, SIKAR

3rd Grade Test Series-2025 L-1 Minor - 04 [Revised_ANSWER KEY] HELD ON : 31/08/2025

Q.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20
Ans.	2	4	1	4	2	3	3	3	1	4	4	3	3	4	1	1	4	2	2	3
Q.	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40
Ans.	4	3	2	2	3	2	4	2	3	3	4	2	1	4	4	4	3	2	1	2
Q.	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
Ans.	2	2	2	2	2	1	2	1	1	3	2	3	4	2	3	1	1	2	1	2
Q.	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80
Ans.	1	2	2	3	4	3	4	1	1	3	4	2	1	4	4	2	1	2	1	3
Q.	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
Ans.	4	2	3	3	1	1	3	2	3	2	1	4	4	1	1	1	4	2	3	2
Q.	101	102	103	104	105	106	107	108	109	110	111	112	113	114	115	116	117	118	119	120
Ans.	1	2	3	2	4	3	1	1	4	2	2	1	1	1	4	4	3	2	2	4
Q.	121	122	123	124	125	126	127	128	129	130	131	132	133	134	135	136	137	138	139	140
Ans.	4	4	2	2	1	2	4	3	2	1	4	1	1	2	3	4	4	3	3	2
Q.	141	142	143	144	145	146	147	148	149	150										
Ans.	1	4	3	4	3	2	3	1	2	4										

Minor-04
L-1
Solution

1. **उत्तर** (2)

व्याख्या:-
- प्रश्न में दिए गए स्थल चरलू, छापर, गोपालपुरा, सेठानी का जोहड़ा आदि चूरू जिले में स्थित है। चूरू में इसके अलावा धर्मस्तूप (लाल घण्टाघर), मालजी का कमरा, झुराणों के हवामहल, रावविलास गोनका की हवेली, दानचन्द चौपड़ा की हवेली आदि भी प्रमुख स्थल है।

2. **उत्तर** (4)

व्याख्या:-
- प्रश्न में सूची-I (धार्मिक स्थल) व सूची-II (जिला) का मिलान करवाया गया है जिसका सही मिलान निम्नानुसार है-

  A. भद्रकाली मंदिर - हनुमानगढ़

  B. सालासर बालाजी - चरू

  C. स्यानण का मंदिर - चूरू

  D. भांडाशाह जैन मंदिर - बीकानेर

3. **उत्तर** (1)

व्याख्या:-
- बीकानेर की देशनोक में करणीमाता का प्रसिद्ध मंदिर अवस्थित है। यहाँ सफेद चूहों (काबा) की अधिकता होने के कारण यह पर्यटकों में 'टेम्पल ऑफ रैट्स' के नाम से प्रसिद्ध है।

4. **उत्तर** (4)

व्याख्या:-
- खुदाबख्श बाबा की दरगाह सादड़ी में स्थित है।
- घाणेराव में मूँछाला महावीर मंदिर, सूर्य नारायण मंदिर, सोमनाथ मंदिर, पार्श्वनाथ जैन मंदिर, नाडोल जैन मंदिर, शांतिनाथ जैन मंदिर, गजानंद मंदिर स्थित है।
- निम्बों का नाथ महादेव मंदिर (फालना)

5. **उत्तर** (2)

व्याख्या:-
- **भीनमाल**- 7वीं शताब्दी ई. में प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग (युआनचुआंग) यहाँ आया। उसने अपनी यात्रा वृत्तांत में भीनमाल का गुर्जरत्रा देश की राजधानी के रूप में उल्लेख किया है।

6. **उत्तर** (3)

व्याख्या:-
- जोधपुर में सचिया माता का मन्दिर, पीपला माता का मन्दिर, ओसिया में जैन मन्दिर, हरिहर मन्दिर, महा मन्दिर, रावण मन्दिर, आई माता का मन्दिर (बिलाड़ा), कुँज बिहारी मन्दिर, मुरलीमनोहर मन्दिर, चामुण्डा देवी मन्दिर (मेहरानगढ़), 33 करोड़ देवी-देवताओं की साळ (मन्डौर) व गंगश्याम व घनश्याम मन्दिर स्थित है।
- निम्बों का नाथ महादेव मंदिर (फालना, पाली) में स्थित है।

7. **उत्तर** (3)

व्याख्या:-
- **मंडोर**- प्राचीन नाम- माण्डव्यपुर। गुप्तकाल में इस प्राचीन नगर का अस्तित्व था। तत्पश्चात् यहाँ विभिन्न कालों में प्रतिहार, परमार, चौहान, राठौड़ राजवंशों तथा मुस्लिम शासकों का आधिपत्य रहा। यहाँ से 8वीं शताब्दी के लगभग बनी सूर्य की बैठी हुई पाषाण प्रतिमा मिली है। यह पुराने समय में मारवाड़ राज्य की राजधानी हुआ करता था।

8. **उत्तर** (3)

व्याख्या:-
- **चौमुखा मंदिर**- पाली जिले में स्थित यह मंदिर रणकपुर जैन मंदिर समूह का भाग है। इसे आचार्य सोमसुन्दर सूरीजी की प्रेरणा से धरणाशाह एवं रत्नाशाह नामक दो भाइयों ने बनवाया था। मन्दिर का निर्माण कार्य देपाक नामक मुख्य शिल्पी के मार्गदर्शन में विक्रम सम्वत् 1496 में सम्पन्न हुआ था। चौमुखा मन्दिर को आदिनाथ मन्दिर, त्रैलोक्य दीपक, त्रिभुवन विहार, धरण विहार, खम्भों का अजायबघर आदि नामों से भी जाना जाता है। इस मन्दिर में कुल 24 मण्डल, 85 शिखर एवं 1444 अलंकृत स्तम्भ कला की उत्कृष्टता का बखान करते प्रतीत होते हैं। यह मन्दिर प्रथम जैन तीर्थंकर आदिनाथ को समर्पित है। अत: इसके गर्भगृह में आदिनाथ (ऋषभदेव) की 4 प्रतिमाएं चारों दिशाओं की ओर उन्मुख होती हुई स्थापित है। अत: इस मन्दिर को चतुर्मुख मन्दिर या चौमुखा मन्दिर के नाम से भी जाना जाता है।

9. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- **विमलशाही मन्दिर-** देलवाड़ा स्थित पाँच मन्दिरों के समूह में विमलशाही मन्दिर सबसे प्राचीन है। इनका निर्माण 1031 ई. में गुजरात के सोलंकी शासक भीमदेव (प्रथम) के मंत्री विमल शाह ने करवाया था। यह मन्दिर प्रथम जैन तीर्थकर ऋषभदेव (आदिनाथ) को समर्पित है।

10. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- **किराडू के मंदिर-** किराडू का प्राचीन नाम किराट कूप था जो बाड़मेर जिले के हाथमा गाँव के पास स्थित है। मंदिर निर्माण में कामुकता के कारण किराडू को 'राजस्थान का खजुराहो' भी कहा जाता है।
- **देलवाड़ा के जैन मंदिर-** यहाँ के जैन मन्दिर स्थापत्य कला एवं मूर्तिकला की दृष्टि से पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। यहाँ पर पाँच मन्दिरों का समूह है। इस समूह के पाँच मन्दिर - 1. विमलशाही मन्दिर, 2. लूणवसही मन्दिर, 3. पार्श्वनाथ या चौमुखा मन्दिर, 4. पीतलहर मन्दिर एवं 5. महावीर स्वामी मन्दिर हैं। इन मन्दिरों में राजस्थान- गुजरात की सोलंकी (चालुक्य) शिल्पकला शैली के प्रमुखता से दर्शन होते हैं।
- **हल्देश्वर महादेव मंदिर-** बाड़मेर के पिपलूद गाँव में छप्पन की पहाड़ियों में स्थित मंदिर, जिसे राजस्थान का लघु माउंट कहा जाता है।
- **एकलिंगजी-** उदयपुर के कैलाशपुरी गाँव में स्थित एकलिंगजी मेवाड़ के गुहिलोत/सिसोदिया राजवंश के आराध्य देव हैं। एकलिंगजी के उक्त मंदिर का निर्माण बप्पा रावल ने करवाया था।

11. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- भरतपुर - राजस्थान का सिंहद्वार
- उदयपुर - पूर्व का वेनिस
- बूँदी - सिटी ऑफ स्टेपवेल्स
- भीलवाड़ा - टेक्स टाइल सिटी
- जालौर - ग्रेनाइट सिटी

12. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- **बाडोली-** बाड़ोली कोटा के लगभग 50 किलोमीटर दक्षिण में चित्तौड़गढ़ जिले में रावतभाटा कस्बे के पास स्थित है। यहाँ पर 8वीं से 12वीं शताब्दी के मन्दिर एक सूमह के रूप में विद्यमान हैं। बाडोली 9वीं-10वीं शताब्दी ईस्वी में शैव उपासना का प्रमुख केन्द्र था। लगभग 10वीं शताब्दी में निर्मित, घटेश्वर मंदिर भगवान् शिव को समर्पित है। यहाँ महाराणा प्रताप की छतरी है।

13. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- **अब्बदुला पीर दरगाह-** यह बोहरा मुस्लिम संत अब्दुल रसुल की मजार है। यह मजार बाँसवाड़ा में स्थित है।
- हजरत कमरूद्दीनशाह की दरगाह झुँझुनूँ के नेहरा पहाड़ की तलहटी में खेतड़ी महल के पश्चिम में स्थित है।
- अजमेर में ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह स्थित है।
- बड़े पीर साहब की दरगाह नागौर में स्थित है।

14. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- कोटा में कंसुवा शिव मन्दिर, विभीषण मन्दिर, मथुराधीश मन्दिर, चारचौमा शिवालय, भीमचौरी का मंदिर, बूढ़ादीत का सूर्य मंदिर, गेपरनाथ महादेव मंदिर, त्रिकाल चौबीसी जैन मंदिर, भीमचोरी मंदिर स्थित है।
- देव सोमनाथ मन्दिर डूँगरपुर जिले में गुर्जर प्रतिहारकालीन कच्छपघात शैली में पंचायतन शैली का मन्दिर है। इसका निर्माण 14वीं सदी में हुआ था।

15. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- **सीताबाड़ी का मंदिर-** सीताबाड़ी का प्रसिद्ध मंदिर बाराँ जिले में स्थित है। यह मंदिर सीतामाता व लक्ष्मण को समर्पित है। यहाँ सहरिया जनजाति का सीताबाड़ी का प्रसिद्ध मेला लगता है। यह सहरिया जनजाति का कुंभ माना जाता है। यह स्थान लव-कुश की जन्मस्थली भी मानी जाती है।

16. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- बाराँ में स्थित मन्दिर- गड़गज मन्दिर (अटरू), भण्डदेवरा का शिव मन्दिर (हाड़ौती का खजुराहो), सीताबाड़ी का मन्दिर, ब्राह्मणी माता मंदिर (सोरसेन), काकूनी धाम, गड़गच्च देवालय (अटरू), फूलदेवरा का शिवालय/ मामा-भांजा मंदिर, कल्याण राय का मंदिर, तेली मंदिर, प्यारेरामजी मंदिर।
- भरतपुर में स्थित मन्दिर- गंगा मन्दिर, **ऊषा मन्दिर** व लक्ष्मण मन्दिर स्थित है।
- करौली में स्थित मन्दिर- **कैलादेवी मन्दिर**, श्रीमहावीरजी मन्दिर, मदनमोहन मन्दिर (गौड़ीय सम्प्रदाय) व मेंहदीपुर बालाजी मन्दिर (दौसा-करौली सीमा पर)।
- सवाईमाधोपुर में स्थित मन्दिर- त्रिनेत्र गणेश मन्दिर, अमरेश्वर महादेव मंदिर (रणथम्भौर), **घुश्मेश्वर महादेव मंदिर (भगवान सिंह का 12वाँ ज्योतिर्लिंग)**, काला-गौरा भैरू मंदिर, चमत्कार जी जैन मंदिर (आलनपुर)।
- बीजासन माता मंदिर बूँदी में स्थित है।

17. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- **लोकतीर्थ देवयानी-** सांभर चौहान राजवंश की प्राचीन राजधानी और सपादलक्ष प्रदेश का एक प्रमुख नगर रहा है। शाकंभरी माता सांभर की अधिष्ठात्री देवी है। शाकंभरी माता के मंदिर के अतिरिक्त वहाँ देवयानी नामक एक प्राचीन तालाब भी है। वर्तमान में देवयानी के नाम से प्रसिद्ध इस तीर्थ का लोकमानस में बड़ा महात्म्य है। देवयानी **सब तीर्थों की नानी** है। यहाँ 10वीं शताब्दी में निर्मित वैष्णव मंदिर आज भी विद्यमान है। देवदानी कुंड से काले पत्थर की बनी सुंदर मूर्तियाँ मिली हैं।

18. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- **हर्षद्माता का मंदिर-** इस मंदिर के भीतर प्रतिष्ठित देवी हर्षत माता का प्राचीन नाम हरिसिद्धि था। मूलत: यह एक विष्णु मंदिर था। हर्षत माता के मन्दिर का निर्माण 8वीं-9वीं शताब्दी में चौहान वंशीय राजा चाँद ने करवाया था। यह मन्दिर 11वीं शताब्दी में महमूद गजनवी के आक्रमण से क्षतिग्रस्त हुआ था।

19. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- **लोकतीर्थ लोहार्गल-** झुंझुनूं जिले की नवलगढ़ पंचायत समिति में लोहार्गल शेखावाटी का एक प्रसिद्ध लोकतीर्थ है। लोकमान्यता है कि लोहार्गल में महाभारतकाल में पांडवों का आगमन हुआ था और महाभारत युद्ध के उपरांत उन्होंने इस पवित्र सरोवर में स्नान किया था जिससे उनके लोहे के शस्त्र गल गए थे और महाभारत युद्ध में किए गए नर संहार के पापों का प्रक्षालन हो गया।

20. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- नारायणी माता मन्दिर (बरवा डूँगरी) अलवर जिले में स्थित है।

21. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- **अजमेर जिले के प्रमुख स्थल-** पुष्कर, अढ़ाई दिन का झोंपड़ा, किशनगढ़, नांद, बघेरा, ब्रह्माजी मन्दिर, सावित्री माता मन्दिर, रंगनाथजी मन्दिर, सोनीजी की नसियाँ, वराह मन्दिर, नवग्रह मन्दिर (किशनगढ़), काचरियानाथ मन्दिर (किशनगढ़), रमा बैकुठ मन्दिर, गायत्री मन्दिर व ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह स्थित है।
- बड़े पीरसाहब की दरगाह नागौर में स्थित है। यह सुफीसंत सैय्यद सैफुद्दीन अब्दुल वहाब जिलानी की मजार है।

22. उत्तर (3)

व्याख्याः-
- कैवाय माता का मन्दिर डीडवाना-कुचामन के पर्बतसर तहसील के किणसरिया गाँव में बना अतिप्राचीन मन्दिर है।
- खरनाल में तेजाजी का मन्दिर स्थित है।
- झोरड़ा में प्रसिद्ध सन्त बाबा हरिराम की जन्म स्थली है।
- लाडनूँ में विश्व विख्यात संत आचार्य श्रीतुलसी की जन्म स्थली है।

23. उत्तर (2)

व्याख्याः-
- प्रश्न में सूची-I (धार्मिक स्थल) व सूची-II (जिला) का मिलान करवाया गया है जिसका सही मिलान निम्नानुसार है-

A. देवनारायण मन्दिर जोधपुरिया - टोंक
B. बागोर साहिब गुरूद्वारा - भीलवाड़ा
C. हर्षनाथ मन्दिर - सीकर
D. भर्तृहरि मन्दिर - अलवर

24. उत्तर (2)

व्याख्याः-
- स्वर्ण नगरी, किले व हवेलियों का शहर - जैसलमेर
- सुवर्ण नगरी, जालहुर, ग्रेनाइट सिटी - जालौर
- सूर्य नगरी- जोधपुर
- गुलाबी नगरी, राजस्थान का पेरिस- जयपुर

25. उत्तर (3)

व्याख्याः-
- फलौदी (पार्श्वनाथ) - फलवर्द्धिका, विजयपुरा, विजयनगर
- किशनगढ़ - कृष्णगढ़
- हनुमानगढ़ - भटनेर
- खाटु - खट्टकूप, खट्टऊ

26. उत्तर (2)

व्याख्याः-
- झालरापाटन स्थित शीतलेश्वर महादेव का मंदिर राजस्थान के सबसे प्राचीन मंदिरों में से गिना जाता है। यह मन्दिर ज्ञात तिथि युक्त राजस्थान का सबसे प्राचीन मन्दिर माना जाता है।

27. उत्तर (4)

व्याख्याः-
- **चारभुजा मंदिर**- यह राजसमंद के गढ़बोर में स्थित है। यह विष्णु को समर्पित मंदिर है। इस मंदिर का जीर्णोद्धार वि. संवत् 1501 में मेवाड़ के महाराणा कुंभा के शासनकाल में हुआ था। इस मंदिर की गिनती मेवाड़ के प्राचीन चार धामों में होती है। मेवाड़ के चार धाम कैलाशपुरी, केसरियाजी, नाथद्वारा तथा चारभुजा है।

28. उत्तर (2)

व्याख्याः-
- **नाकोड़ा**- नाकोड़ा जैन संप्रदाय का प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। यह स्थान मेवा नगर के नाम से जाना जाता है। यहाँ पर तीन भव्य जैन मंदिर हैं जो तीर्थंकर आदिनाथ/ऋषभदेव (सबसे बड़ा) पार्श्वनाथ और शांतिनाथजी को समर्पित हैं। यहाँ प्रतिवर्ष पौष बदी दशमी (दिसम्बर माह) को भगवान् पार्श्वनाथ के जन्म दिवस पर नाकोड़ा ट्रस्ट की ओर से विशाल मेले का आयोजन होता है।

29. उत्तर (3)

व्याख्याः-
- **बुड्ढाजोहड़ गुरूद्वारा**- यह गुरूद्वारा श्रीगंगानगर में स्थित है। इस गुरूद्वारे का निर्माण 1954 ई. में बाबा फतेहसिंह की देखरेख में हुआ था। यहाँ हर माह अमावस्या को मेला लगता है।

30. उत्तर (3)

व्याख्याः-

A. देवीकुण्ड - बीकानेर
B. अन्देश्वर पार्श्वनाथजी - बाँसवाड़ा
C. काला गोरा भैरव - सवाईमाधोपुर
D. अमरसागर - जैसलमेर

31. उत्तर (4)

व्याख्याः-
- **चेतावनी रा चूँगट्या** - इन 13 दोहों (सोरठों) के माध्यम से केसरीसिंह ने स्वाभिमानी शासक फतेहसिंह को दिल्ली दरबार (1903) में जाने से रोका था।

32. उत्तर (2)

व्याख्याः-

- मीसण कृत वीर सतसई स्वाधीनता संग्राम कालीन रचना है।
- वीर सतसई को 1857 की क्रांति का दस्तावेजी काव्य तथा प्रेरणादायी काव्य भी कहा जाता है।

33. उत्तर (1)

व्याख्याः-

- **यादवेन्द्र शर्मा (बीकानेर)**- इनकी प्रमुख रचनाएँ- जमारो, ढोलन कुंजकली (उपन्यास), गुलाबड़ी, चकवे की बात, विडम्बना, लाज राखो राणी सती।

  उपन्यास- संन्यासी और सुन्दरी, दीया जला और दीया बुझा, मिट्टी का कलंक, नया इंसान, पथहीन, ठुकराणी, जनानी ड्योढ़ी, एक और मुख्यमंत्री, ढोलन कुंजकली।

  यादवेन्द्र शर्मा के नाटक- ताश रो घर, महाराजा शेख चिल्ली, मैं अश्वत्थामा, चुप हो जाए पीटर, चार अजूबे, आखिरी पड़ाव, जीमूतवाहन, महाबली बर्बरिक।

  यादवेन्द्र शर्मा की अन्य रचनाएँ- हजार घोड़ों पर सवार, मिट्टी का कलंक, खम्भा अन्नदाता, चांदा सेठाणी, लाज राखो राणी सती, हूँ गोरी किण पीव री, समन्द अर थार, जोग संजोग।
- **चन्द्रप्रकाश देवल**- उदयपुर

  रचनाएँ- पागी, बोलो माधवी, उडीक पुराण, झुरावो, हिरणा! मौन साध वन चारणा (राजस्थानी भाषा), 'कावड़', 'मारग', 'तोपनामा', 'पछतावा', 'मृत्यु किसी को डराती नहीं', 'मृत्यु से मत भागो', 'विपथगा', 'रागविजोग'।
- **नरहरिदास बारहठ**- नागौर

  प्रमुख रचनाएँ- अवतार चरित्र, दशम स्कन्ध पुराण, अहिल्या पूर्व प्रसंग आदि।
- **नथमल जोशी**-

  कहानी संग्रह- परण्योड़ी कंवारी।

  उपन्यास- आभैपटकी, धोरां रौ धोरी, एक बीनणी दो बीन।

  धोरां रौ धणी उपन्यास इटली निवासी डॉ. टेसीटौरी के जीवन पर आधारित है।

  इन्होंने गाँधीजी की जीवनी 'आपणा बापूजी' नाम से लिखी।

34. उत्तर (4)

व्याख्याः-

- **कवि बांकीदास री ख्यात :**

  बांकीदास ने आयो अंग्रेज मुलक रे ऊपर, गौरा हट जा राज भरतपुर रो नामक गीतों की रचना की।

  बांकीदास की अन्य रचनाएं : सूर छत्तीसी, दातार बावनी, कायर बावनी, सुपह छत्तीसी, चुगल मुख चपेटिका, मान जसो मंडन, जेहड़जस जड़ाव, भुरजल भूषण, हमरोट छतीसी, सिद्धराव छतीसी इत्यादि।

35. उत्तर (4)

व्याख्याः-

- कन्हैयालाल सेठिया का जन्म 1919 में चूरु जिले के सुजानगढ़ कस्बे में हुआ।
- धरती धोरा री, पाथल और पीथल, मींझर, लीलटांस, जमीन रो धणी कुण, सबद, सतवादी, वनफूल (पहला काव्य संग्रह), रमणियै रा सौरठा, धरमजलां, धरकूंचा, कूं-कूं, मायड़ रो हैलो, अघोरीकाल, हेमाणी, लीक लकोलिया इनकी लोकप्रिय कृतियां है।
- 2004 में पद्म श्री सम्मानित।
- 2012 में राजस्थान रत्न से सम्मानित।

36. उत्तर (4)

व्याख्याः-

- 17 जुलाई, 2025 को नई दिल्ली स्थित विज्ञान भवन में स्वच्छ भारत मिशन 2.0 के तहत स्वच्छ सर्वेक्षण 2024 पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया।
- डूंगरपुर को 'सुपर स्वच्छता लीग' सम्मान दिया गया। [यह पुरस्कार उन शहरों को दिया जाता है जो गत तीन वर्षों में कम से कम एक बार टॉप तीन में रहे हो तथा मौजूदा वर्ष में अपनी श्रेणी (20 से 50 हजार जनसंख्या) के शीर्ष 200 शहरों में शामिल हो।]

- जयपुर ग्रेटर को 'प्रोमिसिंग स्वच्छ शहर' का सम्मान दिया गया।
- राजस्थान के 12 शहर देश के शीर्ष 100 स्वच्छ शहरों में शामिल है। (उदयपुर, जयपुर ग्रेटर तथा हैरिटेज, कोटा नॉर्थ व साउथ, जोधपुर नॉर्थ व साउथ, बीकानेर, भीलवाड़ा, अलवर, अजमेर, सीकर)

37. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- 2 जुलाई को भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय तथा FSSAI द्वारा राजस्थान के 4 रेलवे स्टेशनों को ईट राइट स्टेशन सर्टिफिकेट से सम्मानित किया गया है जो निम्न है- उदयपुर सिटी रेलवे स्टेशन, सवाई माधोपुर जंक्शन रेलवे स्टेशन, अजमेर जंक्शन रेलवे स्टेशन तथा जयपुर जंक्शन रेलवे स्टेशन।

38. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- जुलाई 2025 में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस संजीव प्रकाश शर्मा को राजस्थान स्थानांतरित किया तथा राजस्थान हाईकोर्ट के जस्टिस श्री चन्द्रशेखरन को बोम्बे हाईकोर्ट में स्थानान्तरित किया।

39. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- राज्य सरकार ने 14 जुलाई 2025 को अपनी मंत्रिमंडल बैठक में RPSC में तीन नए सदस्य पद सृजित कर सदस्य संख्या 7 से बढ़ाकर 10 करने का निर्णय किया।
- इस हेतु 17 जुलाई 2025 को अधिसूचना जारी की गई जिसके तहत भारत के संविधान के अनुच्छेद 318 (a) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग कर राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े द्वारा राजस्थान लोक सेवा आयोग (सेवा की शर्तें) विनियम 1974 के विनियम 3(1) में संशोधन को मंजूरी प्रदान की गई तथा सदस्य संख्या को 7 से बढ़ाकर 10 किया गया।
- अब राजस्थान लोक सेवा आयोग विनियम, 1974 को **'राजस्थान लोक सेवा आयोग विनियम 2025'** के नाम से जाना जाऐगा।

नोट- वर्तमान में राजस्थान लोक सेवा आयोग में एक अध्यक्ष व दस सदस्यों का (1+10) का प्रावधान है।

40. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी की पहल पर कारगिल विजय में शहीद हुए सैनिकों की स्मृति में राजस्थान विधानसभा, जयपुर में कारगिल शौर्य वाटिका का निर्माण किया जा रहा है।

41. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- 27 जुलाई को जयपुर के मदाऊ स्थित जगतगुरू रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय परिसर में 76वें वन महोत्सव का आयोजन किया गया।
- इस अवसर पर उपकार संस्था, अलवर को 'संस्थागत श्रेणी' में वर्ष-2023 का अमृता देवी विश्नोई पुरस्कार प्रदान किया गया।

42. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- **'मिशन हरियालो राजस्थान 2.0'** के तहत हरियाली तीज के अवसर पर जयपुर जिला प्रशासन द्वारा एक ही दिन में 42 लाख 2 हजार 139 पौधारोपण कर प्रदेश के सभी 41 जिलों में अव्वल स्थान प्राप्त किया।
- हरियालो राजस्थान के तहत जिलेवार पौधारोपण में जयपुर (66 लाख), उदयपुर तथा जैसलमेर क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान पर हैं।

नोट- मिशन हरियालो राजस्थान 2.0 के तहत् 10 करोड़ पौधे लगाने जाने का लक्ष्य रखा गया।

43. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- केन्द्रीय मंत्री प्रल्हाद जोशी ने 19 जुलाई, 2025 को राजस्थान के फलोदी की बाप तहसील में जेलेस्ट्रा इंडिया द्वारा विकसित 435 मेगावाट की गौरबिया सौर ऊर्जा परियोजना का उद्घाटन किया।

44. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- दक्षिण कोरिया में आयोजित 32 वीं एशियन जूनियर इण्डिबिजुअल स्क्वैश चैम्पियनशिप में राजस्थान के अनाहत सिंह व आर्यवीर दीवान ने स्वर्ण पदक जीता।

45. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- निक्षय पोषण किट वितरण अभियान का शुभारम्भ चिकित्सा मंत्री गजेन्द्र सिंह खिंवसर ने बीकानेर से किया।
- यह अभियान 27 जुलाई से 31 जुलाई तक चिकित्सा विभाग, राजस्थान द्वारा टीबी रोगियों को पौष्टिक आहार उपलब्ध कराने हेतु आयोजित किया गया।

46. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- **भौगोलिक दृष्टि से राजस्थान में तीन प्रकार के प्रमुख वन पाये जाते हैं -**

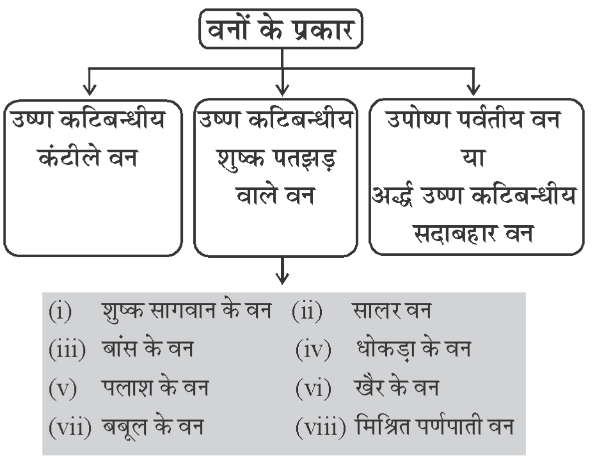

47. उत्तर (2)

व्याख्या:-

उष्ण कटिबन्धीय कंटीले वन :-

- ये वन पश्चिमी राजस्थान के शुष्क तथा अर्द्ध शुष्क भागों में पाये जाते हैं, जहाँ औसत वार्षिक वर्षा 50 सेमी से कम होती है।
- यहाँ राजस्थान का **राज्य वृक्ष खेजड़ी** मिलता है। इसकी अत्यधिक उपयोगिता के कारण इसे **'मरूस्थल का कल्पवृक्ष'** कहा जाता है।

48. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- **प्रशासनिक दृष्टि से राजस्थान के वनों को तीन भागों में वर्गीकृत किया जाता है-**

  राजस्थान वन विभाग द्वारा वन अधिनियम 1953 के प्रावधानों के अनुसार वैधानिक/ प्रशासनिक दृष्टि से वनों को तीन श्रेणियों में बांटा गया है-

1. **आरक्षित वन (Reserved Forest)**- इसमें किसी भी प्रकार की आर्थिक गतिविधि नहीं की जा सकती है।
2. **संरक्षित या सुरक्षित वन (Protected Forest)**- इसमें लाइसेंस प्राप्त कर पशुचारण व सुखी लकड़िया एकत्रित करने संबंधी कार्य कर सकते हैं।
3. **अवर्गीकृत वन (Unclassified Forest)**- आरक्षित व संरक्षित के अलावा शेष बचे हुए वनक्षेत्र (इसमें किसी प्रकार का प्रतिबंध नहीं है)।

49. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- **वनावरण में सर्वाधिक कमी (वर्ग किमी.) करने वाले जिले-**

जिला		**वर्ग किमी.**
जालौर	-	32.46
करौली	-	26.16
सिरोही	-	13.49
भरतपुर	-	9.21

50. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- **अर्जुन वृक्ष**- अर्जुन वृक्ष एक औषधीय वृक्ष है जो राजस्थान के झालावाड़ जिले में भवानी मण्डी क्षेत्र में बहुतायात में पाया जाता है।
- **महुआ- वैज्ञानिक नाम**- मधुका लोंगिफोलिया (सर्वाधिक- डूँगरपुर)।

इसे 'आदिवासियों का कल्पवृक्ष' कहा जाता है।
महुआ फूल का उपयोग शराब बनाने में किया जाता है।
- तेंदू के पत्ते का उपयोग बीड़ी बनाने में किया जाता है।
- इसकी पत्तियों को 'टिमरू' कहा जाता है।
- 1974 में टिमरू (तेंदू पत्ता) के पेड़ का राष्ट्रीयकरण हुआ।

51. उत्तर (2)

व्याख्या:-
- **वन विभाग द्वारा जारी रिपोर्ट (2024-25) के अनुसार वनों की स्थिति** - राज्य में कुल अभिलिखित वन क्षेत्र (Recorded Forest Area)- 33014 वर्ग किमी. है जो राज्य के भौगोलिक क्षेत्र का **9.64 प्रतिशत** है।

52. उत्तर (3)

व्याख्या:-
- ISFR-2023 के अनुसार 2021 की तुलना में राजस्थान में वन क्षेत्र में नगण्य (0.01%) वृद्धि दर्ज की गई।

53. उत्तर (4)

व्याख्या:-
- **खस घास**- यह सुगंधित घास है, जो शरबत बनाने, इत्र व टाटियाँ/पर्दे बनाने में उपयोगी होती है।
  सर्वाधिक- भरतपुर, सवाईमाधोपुर, टोंक एवं अजमेर।
- **धामण**- दुधारू पशुओं के लिए उपयोगी। सर्वाधिक- जैसलमेर।
- **बुर घास**- यह सुगंधित घास है। सर्वाधिक- बीकानेर।
- **मोचिया घास**- यह तालछापर अभयारण्य में पाई जाती है।
  सर्वाधिक- चूरू।

54. उत्तर (2)

व्याख्या:-
- **राजस्थान वन नीति-2023**- 5 जून, 2023 को जारी।
  इस नीति के तहत् राज्य में वन, वन्य जीवन, जैव-विविधता और संरक्षित क्षेत्रों के सतत् प्रबंधन को बढ़ावा देना और आगामी **20 वर्षों** (वर्ष 2040 तक) में वनस्पति आवरण को राज्य के भौगोलिक क्षेत्र के **20%** तक बढ़ाना।

55. उत्तर (3)

व्याख्या:-
- **प्रशासनिक दृष्टि से राजस्थान के वनों का वर्गीकरण-**

वनों के प्रकार	क्षेत्रफल (वर्ग किमी.)	प्रतिशत	सर्वाधिक वन क्षेत्रफल वाला जिला
आरक्षित वन (Reserved)	12198.71	36.95%	उदयपुर, चित्तौड़गढ़
रक्षित वन (Protected)	18631.13	56.43%	बाराँ, करौली
अर्गीकृत वन (Unclassified)	2184.16	6.62%	बीकानेर, श्रीगंगानगर
कुल वन	33014	100%	उदयपुर, बाराँ

56. उत्तर (1)

व्याख्या:-
- **वन विभाग, राजस्थान के प्रशासनिक प्रतिवेदन 2023 के अनुसार राज्य के न्यूनतम वन क्षेत्र (प्रतिशत) वाले जिले-**
  1. चूरू (0.57%) 2. जोधपुर (1.08%)
  3. नागौर (1.36%) 4. जैसलमेर (1.58%)

57. उत्तर (1)

व्याख्या:-

धोकड़ा के वन-
- रेगिस्तानी क्षेत्र को छोड़कर शेष सम्पूर्ण राजस्थान में धोकड़ा के वन पाए जाते हैं। अत: धोकड़ा के वनों का विस्तार राजस्थान में सर्वाधिक है।
- ये वन राजस्थान में 240 से 760 मीटर की ऊँचाई के मध्य कोटा, बूँदी, सवाईमाधोपुर, जयपुर, अलवर, उदयपुर, अजमेर, राजसमन्द, चित्तौड़गढ़ आदि जिलों में मिलते हैं।
- इन वनों में सर्वाधिक वृक्ष धोकड़ा के मिलते हैं। अन्य वृक्षों में पलाश, अड़ूसा मिलते हैं।
- धोंकड़ा को धोंक के नाम से भी जानते हैं। धोंक की लकड़ी मजबूत होती है। इसको जलाकर कोयला (चारकोल) बनाया जाता है।

58. उत्तर (2)

व्याख्या:-

उपोष्ण कटिबन्धीय सदाबहार वन/उपोष्ण पर्वतीय वन :-
- ये वन राजस्थान में **केवल सिरोही जिले के आबू पर्वतीय क्षेत्र** में पाये जाते हैं।
- ये वन सदाबहार वन है तथा ये ऊँचाई वाले क्षेत्रों में ही मिलते हैं। इनमें सालभर हरियाली बनी रहती है।

- ये **राजस्थान के सबसे कम क्षेत्रफल** पर पाये जाने वाले वन हैं जो राजस्थान के कुल वन क्षेत्र के आधे प्रतिशत से भी कम (0.39%) है।
- इन वनों में आम, बाँस, नीम, सागवान आदि के वृक्ष पाये जाते है।
- यह राजस्थान में लगभग 52 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में पाये जाते हैं।
- ये वन 1070 से 1375 मीटर की ऊँचाई पर पाये जाते हैं।
- यहाँ वार्षिक वर्षा लगभग 150 सेमी. है।

59. उत्तर (1)

व्याख्या:-

उष्ण कटिबंधीय शुष्क पतझड़ वन-

- इन वनों का विस्तार राजस्थान के बहुत बड़े क्षेत्र में है।
- ये वन राजस्थान के 50 से 100 सेमी वर्षा वाले क्षेत्रों में मिलते हैं।
- इन वनों को **'मानसूनी वन'** भी कहते हैं।
- ये वन मध्य, दक्षिणी व दक्षिणी-पूर्वी राजस्थान में मिलते हैं।
- ये वन मुख्यतया बाँसवाड़ा, डूँगरपुर, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, सिरोही, कोटा, बाराँ, झालावाड़, अलवर, अजमेर, जयपुर, सवाईमाधोपुर, करौली, बूंदी एवं टोंक जिलों में मिलते हैं।

60. उत्तर (2)

व्याख्या:-

पलाश के वन-

- ये वन पहाड़ियों के मध्य के कठोर, पथरीले व पठारी धरातल पर अलवर, अजमेर, सिरोही, उदयपुर, पाली, राजसमन्द, चित्तौड़गढ़ आदि जिलों में विस्तृत हैं।
- पलाश को जंगल की आग भी कहते हैं।

61. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- **भारत वन स्थिति रिपोर्ट-2023 के अनुसार राजस्थान में वनों की स्थिति**

	18 वीं ISFR 2023 की रिपोर्ट के अनुसार	2021 की तुलना में 2023 में कमी/वृद्धि
1. वन क्षेत्र (अभिलेखित वन)	9.60% (32869 वर्ग किमी.)	0.01% वृद्धि (6 वर्ग किमी.)
2. वृक्षावरण	3.16% (10841.12 वर्ग किमी.)	4.61% वृद्धि (478.26 वर्ग किमी.)
3. वनावरण	4.83% (16548.21 वर्ग किमी.)	0.53% कमी (80.83 वर्ग किमी.)
4. वनावरण+ वृच्छावरण	8.00% (27389.33 वर्ग किमी.)	1.46% वृद्धि (394.46 वर्ग किमी.)

62. उत्तर (2)

व्याख्या:-

भारत वन स्थिति रिपोर्ट 2023 के अनुसार-

- **राजस्थान में अधिकतम वनावरण क्षेत्रफल (वर्ग किमी.) वाले जिले-**

1. उदयपुर (2766.30)
2. अलवर (1198.74)
3. प्रतापगढ़ (996.86)
4. चित्तौड़गढ़ (988.08)
5. बाराँ (975.13)

63. उत्तर (2)

व्याख्या:-

शुष्क सागवान के वन-

- 250 से 450 मीटर ऊँचाई वाले क्षेत्रों में दक्षिणी राजस्थान के उदयपुर, डूँगरपुर, झालावाड़, चित्तौड़गढ़, बारां जिलों में।
- यह वन सर्वाधिक बाँसवाड़ा वन खंड में पाये जाते हैं।
- इन वनों में सागवान के वृक्ष अधिक पाये जाते हैं। अन्य वृक्षों में तेंदू, धावडा, गुरजन, हल्दू, खैर, सेमल, रीठा, सिरिस, बहेड़ा, इमली आदि के वृक्ष मिलते हैं।
- यहाँ स्थित खैर के वृक्ष से कत्था प्राप्त किया जाता है।

64. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- **बाँस**- यह सर्वाधिक लम्बी घास होती है, जिसे आदिवासियों का 'हरा सोना' भी कहा जाता है।
  सर्वाधिक- बाँसवाड़ा, उदयपुर, चित्तौड़गढ़।
  इसका उपयोग टोकरी, चारपाई, झोंपड़ी, कागज एवं फर्नीचर आदि बनाने में किया जाता है।

65. उत्तर (4)

व्याख्या:-

ओरण-

- पश्चिमी राजस्थान में **पर्यावरण संरक्षण की पवित्र उपवन परम्परा** अर्थात् ओरण राजस्थान में पवित्र वन क्षेत्र है जो सामुदायिक रूप से संरक्षित है और **स्थानीय देवी-देवताओं को समर्पित** है। अत: ये सांस्कृतिक विरासत का अभिन्न अंग है इन पवित्र उपवनों को राजस्थान में **ग्रामीण समुदायों द्वारा पारम्परिक रूप से प्रबंधित और संरक्षित** किया जाता है।
- राजस्थान का **सबसे बड़ा ओरण करणी माता मंदिर** के आस-पास का क्षेत्र **(देशनोक, बीकानेर)** में स्थित है।
- माननीय सुप्रीम कोर्ट द्वारा **18 दिसम्बर, 2024 को पारिस्थितिकी व सांस्कृतिक** दृष्टि से महत्त्वपूर्ण ओरण भूमि के संरक्षण हेतु उच्च स्तरीय समिति के गठन का निर्देश दिया गया।
- राजस्थान हाईकोर्ट के **पूर्व न्यायाधीश जे.आर. गोयल की अध्यक्षता** में ओरण भूमि को सुरक्षित रखने हेतु केन्द्रीय अधिकार प्राप्त समिति (C.E.C.) का गठन किया गया।

66. उत्तर (3)

व्याख्या:-

सालर वन (बोसवालिया सेराता)-

- ये वन अरावली के 450 मीटर से अधिक ऊँचाई वाले पहाड़ी क्षेत्रों में उदयपुर, राजसमन्द, चित्तौड़गढ़, सिरोही, पाली, अजमेर, जयपुर, अलवर व सीकर जिलों में मिलते हैं।
- ये वन अरावली पहाड़ियों की उच्च श्रेणियों में पाये जाते हैं।
- इन वनों में सर्वाधिक वृक्ष सालर के मिलते हैं तथा अन्य वृक्षों में धोक, कठीरा, धावड़ आदि मिलते हैं।
- सालर के वृक्ष से गोंद प्राप्त होता है। इसकी लकड़ी पैकिंग के डिब्बे बनाने के काम आती है।

खैर के वन-

- ये वन राजस्थान के दक्षिणी पठारी भाग (झालावाड़, कोटा, बारां, सवाईमाधोपुर, चित्तौड़गढ़) में पाये जाते हैं।
- इन वनों में खैर के साथ बेर, धोकड़ा, अरुंज आदि के वृक्ष मिलते हैं।
- खैर के वृक्ष से कत्था प्राप्त किया जाता है।

67. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल में 5476.75 वर्ग किमी. पर झाड़ियाँ हैं जो कुल क्षेत्रफल के 1.60% पर विस्तारित हैं।

68. उत्तर (1)

व्याख्या:-

उष्ण कटिबन्धीय कंटीले वन-

- **प्रमुख वृक्ष** - उष्ण कटिबन्धीय कंटीले वनों में मिलने वाली मुख्य वृक्षों में रोहिड़ा, खेजड़ी, धोकड़ा, जाल, बेर, बबूल, कैर, फोग, लाना, अरण, थोर, झड़बेरी व नीम आदि हैं।

69. उत्तर (1)

व्याख्या:-

वनस्पति एवं वन्य जीवों के संरक्षण संबंधी कानून/अधिनियम-

- राजस्थान वाईल्ड लाईफ बोर्ड-1955
- राजस्थान वन्य पक्षी संरक्षण अधिनियम-1951
- वन्यजीव संरक्षण अधिनियम-1972
- बाघ संरक्षण अधिनियम-1973
- मगरमच्छ संरक्षण अधिनियम- 1975
- वन संरक्षण अधिनियम-1980 (संशोधित 1988)
- पर्यावरण संरक्षण अधिनियम- 1986
- हाथी संरक्षण अधिनियम- 1992
- जैव विविधता संरक्षण अधिनिमय-2002
- डॉल्फिन संरक्षण अधिनियम- 2009
- ऊँट संरक्षण अधिनियम- 2014
- गोडावण संरक्षण अधिनियम-2014

70. उत्तर (3)

व्याख्याः-

राजस्थान वानिकी एवं जैव विविधता विकास परियोजना (RFBDP)

- राजस्थान वानिकी एवं जैव विविधता विकास परियोजना **फ्रांस** की एजेंसी फ्रांसेइस डी डेवलपमेंट **(AFD)** द्वारा समर्थित एक पहल है जो **2023-24 से 2030-31** तक कुल 8 वर्षों तक चलेगी।
- **वित्तीय सहयोग**- AFD(70%), राज्य (30%)
- यह परियोजना राजस्थान के **13 जिलों**- अलवर, बाराँ, भीलवाड़ा, भरतपुर, बूँदी, दौसा, धौलपुर, जयपुर, झालावाड़, करौली, कोटा, सवाईमाधोपुर और टोंक में क्रियान्वित की जा रही है , जिसका उद्देश्य राज्य के पूर्वी क्षेत्र में जैव विविधता का संरक्षण और पर्णपाती वन संसाधनों में वृद्धि करना है।
- RFBDP का प्रमुख उद्देश्य जैविक विविधता का संरक्षण और संसाधनों का संवर्धन करना है ताकि जलवायु परिवर्तन से निपटा जा सके जो समुदाय सशक्तिकरण के माध्यम से किया जायेगा।

71. उत्तर (4)

व्याख्याः-

- **अमृता देवी बिश्नोई पुरस्कार**- प्रारम्भ- 1994, यह पुरस्कार वृक्षारोपण, वन संरक्षण तथा वन्य जीव संरक्षण के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु प्रदान किया जाता है।

72. उत्तर (2)

व्याख्याः-

वन्यजीव संरक्षण स्थल **मुख्य जीव**

- कुंभलगढ़ अभयारण्य- भेड़िया, बाघ, भालू, चिंकारा, नीलगाय
- सरिस्का अभयारण्य- हरे कबूतर, रीसस बन्दर, बाघ, सांभर
- तालछापर अभयारण्य- काले हिरण व कुरंजा पक्षी
- जयसमंद अभयारण्य - जलीय जीव, रींछ, तेंदुआ, जंगली सूअर

73. उत्तर (1)

व्याख्याः-

राजस्थान में लेपर्ड (तेंदुआ) रिजर्व परियोजनाएँ–

- **झालाना (राज्य का प्रथम तेन्दुआ रिजर्व), नाहरगढ़ एवं आमागढ़** में लेपर्ड सफारी- जयपुर।
- **जयसमन्द** अभयारण्य, उदयपुर में भी लेपर्ड सफारी शुरू करने की घोषणा की गई है।

74. उत्तर (4)

व्याख्याः-

राजस्थान के प्रमुख पार्क-

• जैव विविधता पार्क	- गमधर वन क्षेत्र (उदयपुर)
• प्रकृति (Nature) पार्क	- चूरू, लक्ष्मणगढ़ (सीकर)
• कैक्टस गार्डन	- कुलधारा (जैसलमेर)
• बटरफ्लाई पार्क	- अम्बेरी (उदयपुर)
• बोगनवेलिया थीम पार्क	- जयपुर, उदयपुर
• डेजर्ट पार्क	- किशनबाग (जयपुर)
• ऑक्सी-जोन पार्क	- कोटा
• विश्व वानिकी उद्यान	- जयपुर
• प्रथम पारिस्थितिकी मित्र संभाग	- माउंट आबू

नोट- Monkey Valley of Rajasthan- गलता जी (जयपुर)

75. उत्तर (4)

व्याख्याः-

- वर्तमान में राजस्थान में कुल 37 कंजर्वेशन रिजर्व स्थित है।
- रणखार कंजर्वेशन रिजर्व, जंगली गधों हेतु प्रसिद्ध है।
- आसोप कंजर्वेशन रिजर्व, भीलवाड़ा (नवीनतम 37वाँ कंजर्वेशन रिजर्व है।)
- माही सागर कंजर्वेशन रिजर्व, बड़ी झील (उदयपुर)।

76. उत्तर (2)

व्याख्याः-

वन्यजीव शुभंकर		**जिला**
• जलपीपी	-	बाँसवाड़ा
• खड़मोर	-	अजमेर
• चीतल	-	जयपुर
• राजहंस	-	नागौर
• मोर	-	भीलवाड़ा

77. उत्तर (1)

व्याख्या:-

राजस्थान के प्रमुख रामसर साईट-

- केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान - भरतपुर (1982)
- सांभर झील - जयपुर (1990)
- खिंचन - फलौदी (जून 2025)
- मेनार - उदयपुर (जून 2025)

नोट :- स्टेट वेटलैंड अथॉरिटी राजस्थान ने जुलाई, 2023 तक **44** वेटलैण्ड साइट्स अधिसूचित की है। जिन्हें बढ़ाकर 100 करने का लक्ष्य है। इनमें सबसे अधिक बाराँ (12) जिले में है। राजस्थान सरकार द्वारा अधिसूचना जारी कर वर्ष 2018 में **स्टेट वेटलैंड अथॉरिटी** की स्थापना की गई।

78. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- **राजस्थान के प्रमुख बायोलॉजिकल पार्क-**

1. सज्जनगढ़ - उदयपुर
2. माचिया सफारी - जोधपुर
3. नाहरगढ़ - जयपुर
4. अभेड़ा - नांता, कोटा

नोट- मरुधरा बायोलॉजीकल पार्क - बीछवाल, बीकानेर (निर्माणाधीन)

79. उत्तर (1)

व्याख्या:-

राजस्थान वानिकी एवं जैव-विविधता परियोजना-

- **सहायता-** जापान इंटरनेशनल को-ऑपरेशन एंजेंसी (JICA)।
- **उद्देश्य-** वृक्षारोपण, वन्य जीव एवं जैव-विविधता संरक्षण को बढ़ावा।
  मिट्टी एवं जल संरक्षण।
  पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक-आर्थिक विकास।
  गरीबी उन्मूलन एवं आजीविका सुधार कार्यक्रम
- **प्रथम फेज-** 2003-2010
- **द्वितीय फेज-** 2011-2019 (**10 मरुस्थलीय** - सीकर, झुन्झुनूं, चूरू, जालौर, बाड़मेर, जोधपुर, पाली, नागौर, जैसलमेर व बीकानेर एवं **5 गैर मरुस्थलीय-** बाँसवाड़ा, डूंगरपुर, भीलवाड़ा, सिरोही व जयपुर)
  राज्य के 15 जिलों तथा 7 वन्य जीव संरक्षित क्षेत्रों (कुम्भलढ़, फुलवारी की नाल, जयसमन्द, सीतामाता, बस्सी, कैला देवी एवं रावली-टाडगढ़) में JICA की सहायता से वर्ष में संचालित की गई।

80. उत्तर (3)

व्याख्या:-

वृक्षारोपण कार्यक्रम-

- **मरुस्थल वृक्षारोपण कार्यक्रम-** शुरूआत- 1977-78
  जिले - 10
  वित्तीय भागीदारी- केन्द्र (75%), राज्य (25%)
  नोट- मरुस्थल विकास कार्यक्रम (DDP)
  प्रारम्भ- 1977-78
  जिले- 16
  वित्तीय सहयोग- केन्द्र (75%), राज्य (25%)

81. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- **बाघदर्रा क्रोकोडाइल (मगरमच्छ) संरक्षण पार्क आरक्षिति-** गिर्वा (उदयपुर)
- **ग्रासलैंड संरक्षण और घड़ियाल संरक्षण केन्द्र (घड़ियाल रियरिंग सेंटर)-** पालीघाट (सवाईमाधोपुर)

82. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- राजस्थान की पाँचवीं बाघ परियोजना धौलपुर-करौली बाघ परियोजना अगस्त, 2023 में शुरू की गई, इस परियोजना के तहत् केलादेवी अभयारण्य, राष्ट्रीय घड़ियाल अभयारण्य एवं कुदिन्ना रक्षित वनखण्ड क्षेत्र सम्मिलित किया गया।

83. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- राजस्थान स्थित वन्य जीव संरक्षण स्थल का दक्षिण से उत्तर की ओर व्यवस्थित क्रम है- सीतामाता (प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़ व उदयपुर) - रामगढ़ विषधारी (बूँदी) - रामसागर वन विहार (धौलपुर) - केवलादेव (भरतपुर)।

84. उत्तर (3)

व्याख्या:-

केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान- स्थापना- 1982

- इसको घना पक्षी विहार के नाम से भी जानते हैं। यह राष्ट्रीय उद्यान भरतपुर जिले में स्थित है। इसमें बगुले, बया, कोयल, बटेर आदि पक्षी मिलते हैं एवं शीत ऋतु में यहाँ साइबेरियन सारस/क्रेन आते हैं।
- इस उद्यान को 1985 में यूनेस्को द्वारा विश्व प्राकृतिक धरोहर घोषित किया।
- इसका कुल क्षेत्रफल 28.73 वर्ग किमी. है।
- इसे **पक्षियों का स्वर्ग** कहा जाता है। यह यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में दर्ज है।
- यह गम्भीरी व बाणगंगा नदियों के संगम पर अवस्थित है।
- इस अभयारण्य के पक्षियों की विभिन्न प्रजातियों पर **मार्टिन इवान्स** ने **'भरतपुर बर्ड पैराडाइज'** पुस्तक लिखी है।

85. उत्तर (1)

व्याख्या:-

रामगढ़ विषधारी अभयारण्य- बूँदी

उपनाम- बाघों का जच्चा घर

मुख्य जीव- बाघ, विषधारी साँप एवं रींछ

86. उत्तर (1)

व्याख्या:-

राजस्थान वनीकरण एवं जैव विविधता संरक्षण कार्यक्रम (RABCP)

- यह कार्यक्रम 2021 से शुरू किया गया जिसमें आर्थिक सहायता **जापान अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग एजेंसी/JICA** से प्राप्त हो रही है।
- इसमें 10 मरुस्थलीय जिले (गंगानगर, हनुमानगढ़ के अलावा) तथा 9 गैर मरुस्थलीय जिले (जयपुर, अजमेर, राजसमंद, सिरोही, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा) शामिल हैं।

87. उत्तर (3)

व्याख्या:-

राजस्थान आर्थिक समीक्षा 2024-25 के अनुसार राज्य में वन्य जीवों के सुरक्षित व प्राकृतिक आवास को ध्यान से रखते हुए राजस्थान में **26 वन्यजीव अभयारण्य, 3 राष्ट्रीय उद्यान तथा 5 बाघ परियोजनाएँ** विकसित की गई हैं।

88. उत्तर (2)

व्याख्या:-

आखेट निषेध क्षेत्र :-

- वन्य जीव संरक्षण की दिशा में वन्य जीव सुरक्षा अधिनियम 1972 की धारा 37 के तहत राजस्थान में 26720 वर्ग किमी. क्षेत्र में 33 आखेट निषिद्ध क्षेत्र है। इन क्षेत्रों में शिकार करना कानूनी रुप से प्रतिबंधित होता है।
- राज्य में सर्वाधिक आखेट निषेध क्षेत्र वाला जिला - जोधपुर (7)
- क्षेत्रफल की दृष्टि से राज्य का सबसे बड़ा आखेट निषेध क्षेत्र- कोटसर सम्वतसर (चुरु-बीकानेर)
- राज्य का सबसे छोटा आखेट निषेध क्षेत्र -कनक सागर (बूँदी)

89. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- **राजस्थान का राज्य पक्षी - गोडावण** (1981 में घोषित), इसे **ग्रेट इंडियन बस्टर्ड एवं सोन चिड़िया** भी कहते हैं। यह सर्वाधिक जैसलमेर (मरु उद्यान), अजमेर (सांखलिया) एवं बाराँ (सोरसेन) में पाया जाता है।
- 2024 में जैसलमेर में किए गए वार्षिक वाटर हॉल सर्वेक्षण के दौरान **64** गोडावण पक्षी पाये गये।

90. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- बाघदर्रा क्रोकोडाइल (मगरमच्छ संरक्षण पार्क) - उदयपुर
- खड़मोर ब्रीडिंग सेन्टर - राजस्थान के हाड़ौती क्षेत्र के बारां जिले की अंता तहसील के सोरसन संरक्षित वन क्षेत्र में खरमोर ब्रीडिंग सेंटर बनाया जा रहा है।
- कुरजां संरक्षण रिजर्व -राजस्थान के जोधपुर जिले के खींचन गांव में स्थित है। यह कुरजां पक्षी के लिए भारत का पहला संरक्षित क्षेत्र घोषित किया गया है।

91. उत्तर (1)

व्याख्या :

- **गेट्स व अन्य :** अनुभव तथा प्रशिक्षण द्वारा व्यवहार में उन्नयन ही अधिगम है। अर्थात् अधिगम, अनुभवों तथा प्रशिक्षण द्वारा व्यवहार में संशोधन है।

92. उत्तर (4)

व्याख्या :

- अधिगम में योगदान देने वाले मनोवैज्ञानिक कारक प्रेरणा, अधिगम की इच्छा, रूचि, बुद्धि लब्धि तथा अभिवृत्ति हैं।

93. उत्तर (4)

व्याख्या :

- थॉर्नडाइक के सम्बन्धवाद अधिगम के सिद्धान्त से सबंधित विशेषताएँ -
- अधिगम में प्रयास व त्रुटि समाहित रहती है।
- अधिगम सम्बन्धों या बंधनों के बनने का परिणाम है।
- अधिगम सूझ युक्त न होकर उत्तरोत्तर होता है।

94. उत्तर (1)

व्याख्या :

- परिपक्वता की कमी अधिगम को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

95. उत्तर (1)

व्याख्या :

बिजली गरजना : स्वाभाविक उद्दीपक

गरजने की आवाज से डरना : स्वाभाविक अनुक्रिया

बिजली चमकना : अनुबंधित उद्दीपक

चमक देखकर डरना : अनुबंधित अनुक्रिया

अनुबंधन के समय : चमकना + गरजना → (डर)
(CS) + (US) (UR)

अनुबंधन के पश्चात् : चमकना → डर
(CS) (CR)

96. उत्तर (1)

व्याख्या :

- प्रोग्राम्ड निर्देशन का आधार क्रिया प्रसूत अनुबंधन है। क्रिया प्रसूत अनुबंधन में सीखना अनुक्रिया के परिणाम पर आधारित होता है। इस अधिगम को नैमित्तिक अधिगम/साधनात्मक अधिगम भी कहते हैं। बच्चे रेडियो, कैमरा, टीवी आदि चलाना नैमित्तिक अधिगम के द्वारा सीखते हैं।

97. उत्तर (4)

व्याख्या :

वुडवर्थ के अनुसार -

- नवीन ज्ञान व नवीन अनुभव अर्जन करने की प्रक्रिया ही अधिगम है।
- सीखना विकास की ही प्रक्रिया है।

98. उत्तर (2)

व्याख्या :

- अधिगम का ड्राईव रिडक्शन सिद्धान्त हल ने दिया।
- इसके अनुसार प्रेरणा जैविक जरूरतों से उत्पन्न होती है। यह सिद्धांत मानता है कि जब शरीर की कोई आवश्यकता होती है (जैसे भूख या प्यास), तो तनाव की एक स्थिति उत्पन्न होती है, जिसे 'ड्राइव' कहते हैं। इस तनाव को कम करने के लिए व्यक्ति व्यवहार करता है, और जब वह आवश्यकता पूरी हो जाती है, तो ड्राइव कम हो जाती है और व्यक्ति संतुलन (होमियोस्टेसिस) की स्थिति में आ जाता है।

99. उत्तर (3)

व्याख्या :

- पावलव ने अपना प्रयोग एक कुत्ते पर किया। कुत्ता भोजन की थाली सामने रखने पर लार निकालता था। प्रयोग में भोजन देने के साथ-साथ घण्टी बजायी गई। यहाँ भोजन स्वाभाविक उद्दीपक था घंटी अस्वाभाविक उद्दीपक और लार आना स्वाभाविक अनुक्रिया। कालांतर में यह देखा गया कि एक समय ऐसा आया जब भोजन और घंटी के मध्य साहचर्य स्थापित हो गया और कुत्ते ने भोजन दिए बिना केवल घंटी बजाने पर ही लार का प्रदर्शन किया।

100. उत्तर (2)

व्याख्या :

- अभिक्रमायोजित अधिगम का प्रत्यय स्किनर ने दिया था।
- अभिक्रयोजित अधिगम एक शिक्षण विधि है जिसमें पाठ्यक्रम को छोटे-छोटे, क्रमिक चरणों या पदों में विभाजित करके सीखा जाता है।

101. उत्तर (1)

व्याख्या :

अधिगम की कुछ अन्य विशेषताएँ :-

- अधिगम सतत् प्रक्रिया है। यह सार्वकालिक, सार्वभौमिक है।
- अधिगम परिणाम नहीं अपितु एक प्रक्रिया है। हालांकि नवीन अध्ययन इस बात की पुष्टि करते हैं कि अधिगम प्रक्रिया एवं परिणाम दोनों हैं और इसका प्रक्रिया अथवा परिणाम होना अधिगम की प्रकृति पर निर्भर करता है।
- अधिगम में सदैव एक प्रकार का अनुभव सम्मिलित रहता है।
- अधिगम में होने वाले परिवर्तन अपेक्षाकृत स्थायी होते हैं।

102. उत्तर (2)

व्याख्या :

- हल का सिद्धांत गणितीय संकल्पनाओं पर आधारित है।

103. उत्तर (3)

व्याख्या :

- सीखने के संबंधवादी सिद्धांतों में थार्नडाइक का प्रयास एवं त्रुटि (Trial & Error) का सिद्धांत एक प्रमुख सिद्धांत है, जो बताता है कि प्राणी उद्दीपन के साथ अनुक्रिया करता है और अंततः सफल अनुक्रिया के चुनाव (Selection of Successful Variation) के द्वारा अधिगम को प्राप्त करता है।

104. उत्तर (2)

व्याख्या :

- भय के अधिगम की सर्वोत्तम व्याख्या शास्त्रीय अनुबंधन द्वारा की जाती है।
- मनोचिकित्सा क्षेत्र में शास्त्रीय अनुबंधन द्वारा भय (Phobia) आदि का इलाज किया जाता है।
- इस पद्धति का नाम Systematic Desensitization है।

105. उत्तर (4)

व्याख्या :

प्रभाव का नियम (Law of Effect) :

- जिन कार्यों को करने से प्राणी को संतोष मिलता है। वह उन्हें बार-बार करता है वहीं जिन कार्यों को करने से उसे कष्ट अथवा पीड़ा का अनुभव होता है, वह उन्हें नहीं करता। इसे "संतोष व अंसतोष" या प्रभाव का नियम (Law of Effect) भी कहते है। प्रभाव के नियम में रुचि का सीधा सम्बन्ध है। स्मृति भी प्रत्यक्ष रूप से इनसे सम्बन्धित है। सुखद अनुभव दुःखद अनुभवों की तुलना में अधिगम में अधिक मददगार होता है।

106. Ans. 3

जब दो वस्तुओं का विक्रय मूल्य समान हो और एक पर x% का लाभ तथा दूसरी पर x% की हानि हो तो पूरे सौदे में $\left(\frac{x^2}{100}\right)\%$ की हानि होती है।

$\therefore$ कुल हानि = $\left(\frac{x^2}{100}\right)\% = \left(\frac{10^2}{100}\right)\%$

$= \left(\frac{100}{100}\right)\% = 1\%$

107. Ans. 1

माना सम्पदा का कुल मूल्य = x

x का $\frac{4}{5} = 16800$

$\therefore\ x = \frac{5}{4} \times 16800$

$\therefore\ \frac{3}{7}$ भाग का मूल्य = $\frac{3}{7} \times \frac{5}{4} \times 16800$

$= 3 \times 5 \times 600 = 9000$ रू.

108. Ans. 1

माना एक घड़ी का क्रय मूल्य x रू. है।

प्रश्नानुसार,

$$14\times450-14x=4x$$

$$18x=6300$$

$$x=350 \text{ रू.}$$

109. Ans. 4

$$9SP=12CP$$

$$\frac{CP}{SP}=\frac{9}{12}$$

लाभ % = $\frac{3}{9}\times100=33\frac{1}{3}\%$

110. Ans. 2

माना क्रय मूल्य x रू. है।

हानि = x का $\frac{1}{6}$

∴ प्रश्नानुसार =

x-x का $\frac{1}{6}=600$

$$\frac{5x}{6}=600$$

$$x=600\times\frac{6}{5}$$

$$=120\times6=720$$

अब क्रय मूल्य पर 1/6 लाभ प्राप्त करने के लिए कमीज का विक्रय मूल्य

$$=720+720\times\frac{1}{6}$$

$$=720+120=840 \text{ रू.}$$

111. Ans. 2

लड़कियों की संख्या = x

लड़को की संख्या = x+40

प्रश्नानुसार–

$$2x+40=360$$

$$x=\frac{320}{2}=160$$

लड़कियों की संख्या = 160

लड़कों की संख्या = 200

$$?=\frac{200}{160}\times100=125\%$$

112. Ans. 1

$$A:B=\frac{A}{B}=\frac{24}{18}=\frac{4}{3}$$

$$B:C=\frac{12}{15}=\frac{4}{5}$$

$$\frac{A}{B}\times\frac{B}{C}=\frac{4}{3}\times\frac{4}{5}=\frac{16}{15}$$

$$?\%=\frac{16}{15}\times100=\frac{320}{3}=106\frac{2}{3}\%$$

113. Ans. 1

माना आय = 100 रू., खर्च = 75, बचत = 25

अब आय = 110

बचत = $110\times\frac{25}{100}=27.5$

∵ 25 रू. के बचत में 2.5 रू. की वृद्धि होती है।

∴ 100 रू. के बचत में $\frac{2.5}{25}\times100=10\%$

114. Ans. 1

$$\frac{x\times132\%}{y\times175\%}=\frac{12}{25}$$

$$\frac{x}{y}=\frac{12}{25}\times\frac{175}{132}=\frac{7}{11}$$

115. Ans. 4

- NCF 2005 (National Curriculum Framework 2005) ने सामाजिक विज्ञान शिक्षण में एक महत्वपूर्ण असंगति की पहचान की थी। यह असंगति शिक्षण के लक्ष्यों और वास्तविक शिक्षण विधियों के बीच थी।

इसका मतलब यह है कि :

- शिक्षण के लक्ष्य : NCF 2005 के अनुसार, सामाजिक विज्ञान का उद्देश्य छात्रों में आलोचनात्मक सोच (critical thinking), सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों की समझ, और एक जिम्मेदार नागरिक बनने की क्षमता विकसित करना था।
- वास्तविक शिक्षण विधियाँ : लेकिन, कक्षा में जो पढ़ाया जा रहा था, वह अक्सर रटने (rote learning) पर आधारित था, जहाँ छात्रों को केवल तथ्यों और तारीखों को याद करने के लिए कहा जाता था। इससे वे उन लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर पा रहे थे जो NCF ने निर्धारित किए थे।
- संक्षेप में, NCF 2005 ने इस बात पर जोर दिया कि सामाजिक विज्ञान सिर्फ ज्ञान का संचय (accumulation of knowledge) नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो छात्रों को अपने समाज और दुनिया को बेहतर ढंग से समझने में मदद करती है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, शिक्षण विधियों को भी बदलना जरूरी था।

116. Ans. 4

- NCF 2005 ने बताया कि सामाजिक विज्ञान का पाठ्यक्रम अत्यधिक बोझिल (cumbersome) है और इसमें तथ्यों की बहुत अधिक भरमार है। परिणामस्वरूप विद्यार्थी तथ्यों को रटते (memorise) हैं, परंतु समझ और आलोचनात्मक चिंतन (critical thinking) विकसित नहीं होता। इसलिए सुधार की आवश्यकता बताई गई।

117. Ans. 3

- NCF 2005 के अनुसार सामाजिक विज्ञान को अक्सर "बेकार (useless)" विषय माना जाता है क्योंकि इसे केवल सूचनात्मक (informative) और पाठ्यपुस्तक-केन्द्रित (textbook-centric) विषय बना दिया गया है। इसमें जीवन से जुड़ी प्रासंगिकता (relevance), विश्लेषणात्मक सोच (analytical thinking), और लोकतांत्रिक दृष्टिकोण (democratic outlook) को कम महत्व मिला है।

118. Ans. 2

- NCF 2005 ने कहा कि गणित शिक्षण की एक बड़ी समस्या यह है कि इसे कठोर (rigid) और अत्यधिक अमूर्त (abstract) रूप में पढ़ाया जाता है। विद्यार्थी केवल सूत्र याद करते हैं, लेकिन उनका अर्थ और उपयोग समझ नहीं पाते। यही कारण है कि गणित बच्चों को कठिन और उबाऊ लगता है।

119. Ans. 2

- NCF 2005 ने बताया कि गणित को केवल "समाधान करने" (solve) का विषय मान लिया गया है, जबकि असल में यह "सोचने" (think) और तर्क करने का विषय है। जब बच्चों को सिर्फ सवाल हल करने तक सीमित कर दिया जाता है, तो गणित नीरस और कठिन लगने लगता है।

120. Ans. 4

- गणित की अमूर्तता (abstraction) बच्चों को कठिन लगती है। इसलिए NCF 2005 ने सुझाव दिया कि विद्यार्थियों को विभिन्न गणितीय निरूपणों (representations) का प्रयोग करना चाहिए, जैसे-
- आरेख (Diagrams)
- सूत्र (Formulae)
- सारणी/चार्ट (Charts/Tables)
- ठोस उदाहरण (Concrete Examples)

इससे अमूर्त विचार ठोस और समझने योग्य बन जाते हैं।

121. Answer: (4)

Explanation:

- Pattern practice is a technique more associated with the ALM or GT method which focuses on rote memorization repetition & grammatical accuracy through drills rather than genuine communication.

122. Answer: (4)

Explanation:

- Devoid of means - not having a particular quality.
- CLT includes sociolinguistic competence as well as discourse, grammatical & strategic competence.

123. Answer: (2)

Explanation:
- The main purpose of using materials in the classroom within the CLT approach is to stimulate real life situations for the development of communicative competence.

124. Answer: (2)

Explanation:
- Comprehensible input is considered the most important factor in second language acquisition according to stephen krashen's input hypothesis.

125. Answer: (1)

Explanation:
- SLI is a communication disorder characterized by difficulties in language development in children who don't have hearing loss or intellectual disabilities.

126. Answer: (2)

Explanation:
- This directly expresses the "challenge of teaching English" by providing a remedial source to help students.
- Differentiating instruction means monitioring teaching methods content to meet different need of individual students .

127. Answer: (4)

Explanation:
- Annual exam is a type of summative assessment.
- Examples include class test, weekly test one minute paper ; related to formative assessment.

128. Answer: (3)

Explanation:
- I.K. Davies proposed a four step model for managing the teaching-learning process which includes- planning, organizing, leading & Evaluation or controlling.
- Directing is not the part of this model.

129. Answer: (2)

Explanation:
- Michael scriven is credited with being the first to formally distinguish between formative & summative evaluation in 1967.

130. Answer: (1)

Explanation:
- Remedial teaching focuses on addressing specific learning difficulties & helping students overcome their weaknesses .

131. Answer: (4)

Explanation:
- The focus of remedial teaching should be on providing support & strategies for improvement rather than emphasizing their backwardness.

132. Answer: (1)

Explanation:
- Remedial teaching primarily focuses on cognitive & learning gaps to help studentes overcome these identified weaknesses.

133. Answer: (1)

Explanation:
- Reporting verb 'said to herself' changes to wondered as it reflects question
- 'Shall I have' changes to would have (Future possibility)

134. Answer: (2)

Explanation:
- The quoted statement is a universal truth or a scienfific fact, so, its tense does not change when reported indirectly.

135. Answer: (3)

Explanation:
- The given sentence expresses a polite request.
- Said to → requested
- Please will be removed in indirect statement.
- To + Base form of the verb........

136. Answer: (4)

Explanation:
- This is an imperative sentence in direct speech, giving a negative command.
- Said to → Forbade
- 'Not' will be removed if we use forbade.
- To + Base form of the verb.......

137. Answer: (4)

Explanation:
- The original sentence expresses a wish or a blessing
- Said to → Wished
- Conjunction → That
- May → Might

138. Answer: (3)

Explanation:
- The one word for 'Which or who can' t be conquered' is **invincible**
- Invisible → Can't be seen
- Inaccessible → Can't be reached
- Insolvent → Unable to pay debts.

139. Answer: (3)

Explanation:
- A **misologist** is a person who hates or dislikes reasoning, learning & knowledge.
- Misogynist – Strongly prejudiced against women.
- Inconoclast – Who attacks on beliefs & traditions.
- Imposter – Who pretends to be somebody else in order to cheat people.

140. Answer: (2)

Explanation:
- A **teetotaller** is a person who practices total abstinence from alcoholic beverages.
- Samaritan - A charitable or helpful person.
- Thrifty – using money carefully.
- Philologist – Who studies language in written historical sources.

141. उत्तर (1)

व्याख्या:-
- दहीबड़ा - दही में डूबा हुआ बड़ा (लुप्तपद तत्पुरुष समास)

142. उत्तर (4)

व्याख्या:-
- रसभरा, भयाकुल (करण तत्पुरुष समास) चंद्रवदन (कर्मधारय समास)
- पापमुक्त, (अपादान तत्पुरुष समास) देवालय, रनिवास (सम्प्रदान तत्पुरुष समास) कपीश, मनसिज (बहुव्रीहि समास)
- राजसभा (संबंध तत्पुरुष समास)
- दुर्वादल, जलधारा, मृगछौना (तत्पुरुष समास)

143. उत्तर (3)

व्याख्या:-
- कर्मधारय समास के पदों में विशेषण-विशेष्य या उपमेय-उपमान का संबंध होता है।
- इस समास में दूसरा पद प्रधान होता है। इसे बनाने में दो पदों के बीच कारक चिह्नों का लोप हो जाता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।
- इस समास में दोनों पद ही प्रधान होते हैं इसमें किसी भी पद का गौण नहीं होता है।
- अन्य पद/ तीसरा पद या कोई पद प्रधान नहीं।

144. उत्तर (4)

व्याख्या:-
- दामोदर, पंचशर, रत्नगर्भा - बहुव्रीहि समास
- नीलोत्पल - कर्मधारय समास

145. उत्तर (3)

व्याख्याः-
- तेली के बैल को घर ही पचास कोस। - घर में ही कार्य की अधिकता होना।
- पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं। - पराधीनता में सुख नहीं होता।
- बारह बरस पीछे घूरे के भी दिन फिरते हैं। - एक न एक दिन सभी के जीवन में अच्छे दिन आते हैं।
- तीन लोक से मथुरा न्यारी। - सबसे अलग विचार रखना।

146. उत्तर (2)

व्याख्याः-
- एक तो चोरी दूसरे सीना-जोरी।- अपराध करके रौब जमाना।
- एक म्याँन में दो तलवारें नहीं समा सकती। - दो समान अधिकार वाले व्यक्ति एक साथ कार्य नहीं कर सकते।
- एके साधे सब सधे, सब साधे जब जाय। -एक समय में एक ही कार्य करना फलदायी होता है।
- एक ही थैली के चट्टे-बट्टे होना। -समान दुर्गुण वाले एकाधिक व्यक्ति।

147. उत्तर (3)

व्याख्याः-
- बाप ने मारी मेंढकी बेटा तीरंदाज। - परिवार के मुखिया के अयोग्य होने पर भी संतान का योग्य होना।
- बिच्छू का मंतर न जाने, साँप के बिल में हाथ डाले। - योग्यता के अभाव में भी कठिन कार्य का जिम्मा लेना।
- मन के लड्डूओं से पेट नहीं भरता। -केवल कल्पनाओं से तृप्ति संभव नहीं होती है।
- सब धान बाईस पंसेरी। - अच्छे-बुरे की परख न कर सबको समान समझना।

148. उत्तर (1)

व्याख्याः-
- नाच न जाने आँगन टेढ़ा। - स्वयं के दोष छिपाने हेतु दूसरों में कमियाँ ढूँढना।
- नेकी कर कुए में डाल। - भलाई करके भूल जाना।
- नेकी और पूछ-पूछ। - अच्छे कार्य के लिए किसी से पूछने की आवश्यकता नहीं होती।
- नीम हकीम खतरे जान। -अधूरा ज्ञान हानिकारक होता है।

149. उत्तर (2)

व्याख्या-
- जब हिंदी की कक्षा में केवल हिंदी को ही एकमात्र भाषा के रूप में मान्यता दी जाती है, तो यह उन छात्रों के लिए एक बाधा बन जाती है जो अन्य भाषाएं बोलते हैं। भारत जैसे बहुभाषी देश में, बच्चे अक्सर घर पर अपनी मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा बोलते हैं। अगर शिक्षक उनकी भाषा को स्वीकार नहीं करते और केवल हिंदी में ही संवाद करते हैं, तो छात्र असहज महसूस करते हैं और सीखने की प्रक्रिया में पूरी तरह से शामिल नहीं हो पाते। यह प्रथा बहुभाषी कक्षा के सिद्धांत के विरुद्ध है, जहाँ सभी भाषाओं को सम्मान दिया जाना चाहिए ताकि छात्र अपनी भाषाई पृष्ठभूमि का उपयोग सीखने के लिए कर सकें।

150. उत्तर (4)

व्याख्या-
- एक भाषा शिक्षक के लिए सबसे बड़ी चुनौती यह सुनिश्चित करना है कि कक्षा में हर बच्चे को सीखने का मौका मिले, भले ही वे अलग-अलग भाषाई पृष्ठभूमि से आते हों। कक्षा में एक ही समय में अलग-अलग भाषाएं बोलने वाले छात्रों को पढ़ाना आसान नहीं होता। इसके लिए शिक्षक को ऐसी शिक्षण रणनीतियाँ अपनानी पड़ती हैं जो सभी छात्रों को शामिल करें, जैसे कि उनकी मातृभाषा का उपयोग एक पुल (bridge) के रूप में करना, विभिन्न भाषाओं के शब्दों को तुलनात्मक रूप से सिखाना, या समूह कार्य (group work) में अलग-अलग भाषा बोलने वाले छात्रों को मिलाना। इन रणनीतियों को सफलतापूर्वक लागू करना ही एक भाषा शिक्षक के लिए सबसे बड़ी चुनौती है।